ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

घोड़ियों में मद के लक्षण एवं उनकी पहचान

अरुण कुमार, नेहा चौधरी, मोहित कुमार एवं जितेन्द्र अग्रवाल

मादा पशु रोग विज्ञान विभाग, पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय मथुरा

घोड़ों का पालन उनकी शारीरिक क्षमता के उपयोग के लिए किया जाता है। इनका उपयोग खेल-कूद में, सेना में, परिवहन इत्यादि में किया जाता है। इन सभी कार्यों के महत्त्व को देखते हुए अधिक से अधिक संतान प्राप्ति करके ही अधिकाधिक लाभ कमाया जा सकता है। घोडियों का पालन आर्थिक रूप से तभी फायदेमंद है जब एक साल में एक संतान पैदा करे। अतः यह अति आवश्यक है कि मादा पशु समय से यौनावस्था प्राप्त करे या प्रसव के बाद सही समय पर मद में आकर पुनः गर्भित हो। जिसके के लिए बहुत जरुरी है कि घोड़ी के मद काल की एवं उस समय होने वाले बदलावों की उचित जानकारी होनी आवश्यक है , जिससे समय से प्राकृतिक अथवा कृतिम गर्भाधान का प्रबंधन आसानी से किया जा सके। इसलिए पशुपालक को प्रजनन और उससे सम्बंधित प्रबंधन के बारे में अच्छी जानकारी होनी चाहिए।

घोडियों में प्रजनन काल मध्य अप्रैल से मध्य सितम्बर तक होता है। घोड़ियों में मद चक्र केवल प्रजनन काल में ही प्रकट होता है। इस काल में अण्डाशय क्रियाशील होते है और पूर्ण विकसित अण्डा मुक्त करते है। घोडियो में मद चक्र लगभग 22 दिनों का होता है और मद 5-7 दिनों का होता है। मद चक्र की इस अवस्था में मादा पशु में नर पशु के साथ प्रजनन करने को आकर्षण बढ जाता है। सही लक्षणों को पहचान कर ही अण्डा मुक्त होने के समय का आंकलन किया जा सकता है जिससे सफल गर्भाधान कराया जा सके।

घोड़ियों में मद के लक्षण जैसे योनि द्वार का लम्बा होना और उसका बाहर कि तरफ दिखना , भग-शिश्न का बार बार अन्दर बाहर होना , घोड़ी का घोड़े कि तरफ जाना , पूंछ को उपर को उठा कर के एक ओर रखना, घोड़ी का बार बार हिन-हिनाना, कानो का आगे कि ओर शिथिल होना, बाड़े की दीवार को धक्का देना, बार बार पीले रंग का पेशाब करना इत्यादि देखने को मिलते है। मद के समय होने वाले ये बदलाव अन्तःश्रावों के कारण होते है।

मद के लक्षण प्रत्येक घोड़ी में अलग अलग प्रबलता के साथ दिखाई देते है , इसलिए इनको पहचानना बहुत आवश्यक हो जाता है। कुछ घोड़ियाँ जिन्हें उनके बच्चो या दूसरी घोड़ियों के साथ रखा जाता है , मद के लक्षण प्रकट ही नही करती है। कुछ घोड़ियाँ ऐसी भी होती है जो कि मद के लक्षण बहुत ही कम प्रबलता के साथ दिखाती हैं। मद के लक्षण पहचानने के लिए कई तरीके अपनाये जा सकते है।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

जिनमे कुछ प्रमुख विधियां टीजिंग करना , घोड़ी का बार बार उसके मद के लक्षणों के लिए परीक्षण करना, मद अनुमान चार्ट बनाना , ध्वनि रिकॉर्डिंग करना , अल्ट्रासोनोग्राफी करना तथा मलाशय का परीक्षण करना इत्यादि हैं। इनमे से टीजिंग करना मुख्य तथा अधिक उपयोग की जाने वाली विधि है। घोड़े कि अनुपस्थिति में घोड़ी मद के लक्षण प्रकट नही करती। घोड़ी मद में बहुत कम ही दूसरी घोड़ियों पर चढ़ती है। मद पहचानने का सबसे आम तरीका टीजिंग है , जिसमे कि घोड़ी नसबंदी किये हुए घोड़े के साथ में रखते है। घोड़ी अगर मद में होती है तो वो घोड़े के थूथुन द्वारा खुद को छूना , खेलना, इत्यादि करने देती है और यदि घोडा ऊपर चढ़ता है तो खुद शांत अवस्था में खड़ी रहकर ऐसा करने देती है। साथ ही साथ मद के अन्य लक्षणों को भी प्रकट करती है । और यदि घोड़ियाँ मद में नही होती वो घोड़े को अपने पास नहीं आने देती, उनको पैर मारती है और काटती है।

समय से मद के लक्षणों की सही पहचान करना बहुत ही महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जिससे गर्भाधान सही समय पर करवाया जा सके। इस प्रकार से गर्भधारण होने की दर को प्रभावी ढंग से बढ़ाया जा सकता है। इस प्रकार से सही वैज्ञानिक जानकारी का उपयोग करके पशुपालक घोड़ियों का प्रजनन प्रबंधन बेहतर तरीके से कर सकते है और अधिक से अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं।